WWJMRD 2019; 5(9): 40-42
www.wwjmrd.com
International Journal
Peer Reviewed Journal
Refereed Journal
Indexed Journal
UGC Approved Journal
Impact Factor MJIF: 4.25
E-ISSN: 2454-6615

अपर्णा तालुकदार दास
छोधार्थी, रवीन्द्र नाथ टैगोर
विश्वविद्यालय भोपाल (मध्य प्रदेश)
भारत

Correspondence:
अपर्णा तालुकदार दास
छोधार्थी, रवीन्द्र नाथ टैगोर
विश्वविद्यालय भोपाल (मध्य प्रदेश)
भारत

असमिया कवयित्री नलिनीवाला देवी की परिचय, जन्म, शिक्षा, विवाह

अपर्णा तालुकदार दास

सारांश

असमिया काव्य साहित्य के इतिहास में पद्मश्री नलिनीवाला देवी एक सदा याद रखनेवाली नाम हैं। असमिया महिला कविओं में एक सबसे आगे नलिनी कविता, नाटक, साहित्य आलोचना जीवनी आदि रचना करके असमिया साहित्य मन्दिर के लिए मानो अमुल्य प्रसाद ही दाल दिया। नलिनीवाला जैसी चारो दिशाओ में साहित्यिक अवदान रखनेवाली अन्य कोई महिला अभी तक देखा नहीं गया हैं। 1977 के आगे तक ऊथति, मृत्य समय तक उन्होंने काव्य, साधना जारी रखी। नलिनीजी देशप्रेमिका, समाजसेविका तथा समाज सुधारक थी। नलिनी असमिया जाति के गौरव हैं। उनके विषय में देशवासियों को ध्यान आकर्षित करना ही इस पाठ की उदेश्य हैं।

नलिनीजी केवल असम की ही नहीं भारत वर्ष की एक रहस्यवादी कवि तथा भारतीय दर्शन को उपलब्धि करने वाली महान कवयित्री थी। उनकी रचनाओ में रवीन्द्र नाथ ठाकुर का प्रभाव भी हैं। असमिया कवयित्री नलिनीजी को महादेवी वर्मा जी के साथ तुलना कर सकते है। महादेवी वर्मा जी के साथ तुलना कर सकते हैं। महादेवी जी की साहित्य और नलिनीवाला जी की काव्य साहित्य की अनेक समानता हैं। इस अध्याय कें नलिनीवाला देवी जी की व्यक्तित्य, शिक्षा, विवाह आदि के बारे कें हम आलोचना करेंगे।

नलिनीवाला देवी की परिचयः-

नलिनीवाला देवी की जन्म सन 1898 के 20 मार्च में असम के बरपेटा जिले में हुआ था। उनके पिता कर्मबीर नवीनचन्द्र बरदलै एक समाजसेवक थे। नलिनीवाला की दादा जी सरकारी हाकिम थे और नौकरी के कारण बरपेटा में थे। उन दिनों ही नलिनी जी का जन्म हुआ था। दादाजी नै बचपन में नलिनीजी का नाम पदिमनी रखा था। बाद में पिता नवीन चन्द्र बरदलै जी ने बेटी का नाम नलिनी रखा। नलिनी जी माता पिता के दुसरी सन्तान थी। पहला लड़का था। परन्तु उनका निधन हौ गया था। लोग नलिनीजी को ही पहली सन्तान मानति थी। बचपन में नलिनीजी अनेक लाड़-प्यार में पलि बड़ी थी। बचपन से ही नलिनी जी बहुत प्यारी और सुन्दर थी। दादाजी की गोद में बचपन में खेल, कुद करके अनेक प्यार में पलि थी।

बरपेटा में कुछ साल रहने के बाद दादाजी के साथ गुवाहाटी आ गये। गुवाहाटी उजान बाजार में रहने लगे। बाद में दादाजी की नौकरी तेजपुर में होने के कारण कुछ साथ परिवार सहित नलिनीजी असम के तेजपुर जिले में रहने लगी। दादाजी रायबाहादुर हारने के कारण घरमे नौकरो की कमी नही थी। समाज में नलिनीजी की परिवार एक खास मानने रखती है, लोग सन्मान करते थे।

शिक्षाः- नलिनीजी ने कभी आनुस्थानिक शिक्षा प्राप्त नहीं किया था। क्योंकि उस, समय असम में नारी शिक्षा के लिए कोई व्यवस्था नहीं था। तेजपुर में दादाजी ने उन्हे बंगला माध्यम से शिक्षा दिया था। पंडित गुरूदास और पत्नी स्वर्णमयी दास के पास घर में ही बंगला माध्यम में पहला शिक्षा लिया। परन्तु बंगला में

अनेक कस्त होने के कारण गुवाहाटी तक परिवार सहित लोट आये।

गुवाहाटी में भी बालिका स्कुल उपलब्ध नहीं होने के कारण नलिनीवाला जी ने बहन मृनालिनी संग घर में ही शिक्षा प्रारम्भ किया।

पिता नवीनचन्द्र बरदलै जी ने अनेक महान शिक्षक के जरिये घर में दोनो बेटी को शिक्षा का प्रबन्ध कर दिया था। उस समय गुवाहाटी के कार्जन हल के लाईवेरियान गोपालकृष्ण दे के अधीन में नलिनी जी शिक्षा लिया करती थी। गोपालकृष्ण संस्कृत के पंडित थे। नलिनी जी की और दो शिक्षक जैसे निशिकान्त सेन और यग्येश्वर बरूवा थे। गृह शिक्षक के जरिये अध्ययन करके नलिनीजी असमिया, बंगला, संस्कृत, अंग्रेजी, गणित भुगोल, इतिहास, साधारण विज्ञान आदि में काफी ज्ञान लाभ किया। नलिनीजी बचपन से ही चतुर बुद्धी की थी। उनकी स्मृति शक्ति, तथा भगवान प्रेम को देखकर दादा, दादी, बहुत खुश होते थे। चार पाँच साल से ही दादाजी के साथ रहकर उनके आज्ञा का पालन करती थी।

नलिनीजी पशु–पक्षीओ को अनेक प्यार, करती थी। इसलिए दादाजी ने धर में ही एक चिड़िया घर बना दिया था। नलिनीजी अपने पढ़ाई के साथ असम के अनेक तीर्थस्थान की यात्रा किया था। बैल गाड़ी, घोड़ा गाड़ी, ओर नाव में वह दादा दादी के साथ दुर दुर तक तीर्थ किया करती थी। भक्ति भाब की प्रभाव अपने दादी जी के कारण पड़ा। दादी जी के संग सुवह साम भगवान कृष्ण को पुजा किया करती थी। दादी जी के मुँह से ही नलिनी जी ने रामायण महाभारत तथा पुराणों की कहानी का ज्ञान प्राप्त किया था, महापुरुश शंकरदेव और माधवदेव द्वारा रचित बरगीत की चर्चा भी दादीजी संग ही किया करती थी। इस प्रकार महा आनन्द के साथ किशोर उपस्था को नलिनीजी ने अतिक्रम किया था। सन 1907 में नलिनीजी की दादाजी का देहान्त हो गया। उस समय नलिनी जी की उम्र न साल की थी। दादाजी की मृत्यु से नलिनी दुखी हो गयी थी।

प्राकृतिक सोन्दर्य के साथ अपने घर में किया था। अपने पिता नवीन चन्द्र बरदलै जी के आदर्श से जीवन में नलिनीजी आगे बड़ने लगी। समय बीतता गया उस समय नलिनीजा की बुआ चौदह साल की आयु मे विधवा होकर घर में लोट आयी। नलिनी जी को बहुत दुख हुआ वह बुआ को पुजा पाठ में हाथ बटाने लगी। घर के कामो में भी नलिनी जी माहिर थी। कपड़ा, बुनना, पशु, पक्षियों को काना देना घर का खाना सब कामों में अपनी माँ को हाथ बटाटी थी। नलिनीजी ने उपने पिता से ही संगीत की शिक्षा लि थी। गाना गाना, कविता गाना मानों सभी दिशाओं मे आगे थी।

विवाहः– देखते देखते नलिनीजी बड़ा होने लगी। ग्यारह वर्ष की आयु में कदम रखी। घर वालो ने शादी के लिए वर ढुँढ़ना शुरू कर दिया। क्योंकि उस समय बाल विवाह प्रभा थी।

असम के शिवसागर जिले के कृष्णप्राण सांकाकति के पुत्र जीवेश्वर सांकाकति से नलिनीजी का विवाह सन 1909 में सम्पंन हुआ।

शशुराल में भी नलिनी जी को बहुत आदर सन्मान मिला शशुर कृष्णप्राण जी रेभिनिऊ सिरस्तादार थे। उनका समाज में मान सन्मान था। चौदह साल की आयु में नलिनीजी ने पुत्र उपन्द्र कुमार सांकाकति को जन्म दिया। इसके बाद भी चार बच्चे को जन्म दिया।

उप्रन्द्रनाथ, उषादेवी, पविन्द्रप्राण, राममुर्ति नामक सन्तान को जन्म दिया। सन 1917 में दुर्गा पुजा के महा अस्तमी के दिन नलिनी वाला देवी विधवा हो गई हाथ में चार बच्चे और पेट में पल रहा बच्चे को लेकर नलिनी जी शिवसागर से अपने माईके गुवाहाटी वापस लोट आ गई। नलिनी जी के पति जीवेश्वर सांकाकति एक अच्छे वकील, गायक और अभिनेता थे। अनके मृत्य के बाद नलिनीजी उदास हो गई। कम आयु में ही उनको अनेक दुखो का सामना करना पड़ा। पिता ने नलिनी जी को सफेद कपड़ा पहते देखकर सर्वशुक्ला महाशेता बनने की आशीर्बाद दिया, पिता ने गीता घर्मग्रन्थ नलिनी जी को दिया और धर्म के रास्ते चलने के लिए उपदेश दिये। तब से नलिनीजी तपश्विनी की जीवन बिताने लगी। पति के मृत्यु के बाद बेटी अरूणा देवी को नलिनीजी ने जन्म दिया। कुछ साल बाद नलिनीजी के ऊपर दुख का पहाड़ तुत पड़ा। नलिनीजी के दो पुत्र पवित्रप्राण और राममुर्ति का देहान्त हो गया। पति, पुत्र सभी को खोने के बाद एकमात्र भगवान शक्ति में लीन होकर नलिनीजी जीवन में आगे बढ़ने लगी तथा साहित्य साधना, समाजसेवा में अपने को नियोजित किया।

जीवन में दुखो का सामना करके नलिनीजी के हृदय दग्ध हो चुके थे। घर के धार्मिक न्याय संगत परिवेश ने नलिनीजी को जीवन में संधर्ष करने के लिए साहस दिया। उसी समय में नलिनीजी साहित्य साधना में अपना मनोनिवेश किया। अवश्य ही कविता प्रतिभा का रूप बचपन में ही दिया था 'पिता' नामक कविता की आठ साल की उम्र में ही लिखी थी। हृदय के दुख वेदना को कविता के माध्यम से नलिनी जी प्रकट किया।

कर्मक्षेत्रः–नलिनीजी की साहित्यिक अवदान श्वरुप सात प्रकाशित काव्य संग्रह और पाँच अप्रकाशित काव्य ग्रन्थ है। तीन जीवनी प्रकाशित शिशु नाटक तीन, अप्रकाशित नाटक नो है।

इसके उपरोक्त भी रेड़ियों नाट, नृत्य नाट भी कई उन्होने लिखे। नलिनीजी की एक मात्र प्रबंध ग्रन्थ शान्तिपथ। विभिन्न सभा समितिओ दिया गया कई अभिभाषन भी है। नलिनीजी न आजीवन साहित्य साधना करके असमिया साहित्य को समृद्ध किया। असमिया रोमान्तिक काव्य साहित्य के साथ आध्यात्मवाद को जोड़कर साहित्य को एक नई दिशा दिया। नलिनीजी ने सर्व भारतीय साहित्य में असमिया साहित्य को एक अलग स्थान में बिठाया।

ध्यान रखने वाली बात यह थी कि नलिनीजी की दृष्टि केवल साहित्य साधना में ही थी ऐसा नहीं उन्होने अपने समाज के लोगो के लिए भी उनेक काम किये। आत्मविश्वास, कुसंस्कार हटाकर समाज को एक नई दिशा देने की कोशिश की। उस समय नलिनीजी के पिता के घर राजनीति के प्राणकेन्द्र स्वरूप थे। पिता नवीन चन्द्र बरदलै उस जमाने के 'मुकुटविहीन सम्राट' माना जाता था। इसी हिसाब से भारतवर्ष के कई विख्यात राजनैतिक नेताओ का उनके धर में आना जाना था। स्वाधीनता के इस आन्दोलन में नलिनीजी ने भी अपना सेवा प्रदान किया। उस समय भारतीय कंग्रेस कर्मी ओ को उत्साह प्रदान किया। सन 1921 के असहयोग आन्दोलन में अपने पिता के साथ नलिनीजी ने भी अपना योगदान दिया। घर मे कामो के साथ संतन्त्रता संग्राम के कार्य में भी पिता के साथ सन 1936 तक लगी रही। नलिनीजी के घर गुवाहाटी में कंग्रेज की कार्यालय थी। सन 1936 को कार दुर्घटना में नलिनीजी के पिता नवीन चन्द्र बरदलैजी का हेहान्त हो गया। बरदलै जी के मृत्यु से भारतीय कांगस की बहुत बड़ा लकसान का सामना करना पड़ा। पिता का देहान्त के बाद भी नलिनीजी देश सेवा में लगी रही। असमिया नारी समाज को आगे बढ़ाने के लिए जगह जगह जाकर

महिला समिति का निर्माण किया, दुसरीबार जव महात्मा गांधी असम आये थे तब गांधी को स्बराज फान्द के लिए दान संग्रह कर दिया था। सन 1941 में असम को इसलाम प्रदेश बनाने की कोशिश हो रही थी। पुर्व वंग के साथ असम को जोड़ने की कोशिश किया गया था उसी समय असम के देशप्रेमिक लोग अम्बिकागिरि राय चौधुरी जी को साथ नलिनीजी ने महात्मा गांधी को 'बापुजीलै आवेदन' नामक एक कविता लिखकर भेज दिया।

पुरी भारतवर्ष में स्वाधीनता के आन्दोलन जोड़ से चल रही थी। उसी समय नलिनी वाला देवी अपने पुत्र उपेन्द्रनाथ सांकाकति के साथ असम के तेजपुर जिले में गयी। वहा उन्होने असम के विख्यात आगरवाला परिवार से जुड़ेष असमिया सिनेमा जगत की निर्माता रूपकुबर ज्योतिप्रसाद आरगवाला के साथ नलिनीजी की भाई-बहन जैसी रिस्ता थी। रूपकुवर ने तेजपुर में संगीत विद्यालय की स्थापना किया इस विद्यालय के उदधाटन समारोह में नलिनीजी ने भाषण दिया था। उनके भाषण से रूपकुवर ज्योतिप्रसाद जी प्रभावित हुए थे। सन 1941 में नलिनीजी गुवाहाटी आकर देश सेवा मे मनोनिवेश किया, उस समय दुसरी विश्वयुद्ध के लिए आतंक मचा था। असम के कविगण अपनी कविता के जरिये असमिया नारी गण को इस संग्राम के भाग लेने के लिए प्ररित किया करती थी। सन 1943 में नलिनी अपने पुत्र के साथ कलकता चली गईष कलकता में भाषा आन्दोलन के समय 'असम संध' नामक के अनुस्थान स्थापित हुआ। इस अनुस्थान की नलनीजी उप सभानेत्री नियुक्त हुई। जव 1946 में असम को पुर्व वंग के साथ जोड़ने की कीशिश की गई थी तब भी नलिनीजी ने इसका विरोध करके माहत्मा गांधी को मिलकर 'महामानव' नामक कविता लिख कर उनको प्रदान किया था। सन 1947 के 15 आगस्त को हमारे भारतवर्ष की आजाड़ी मिलि उस समय समंग्र देश वारियों के साथ नलिनीजी भी आनन्द में डुबी हुई थी। इस आनन्द के समय नलिनी जी 'स्वाधीनता' नामक कविता की रचना किया। इस कविता को उसी दिन रेडियो में गाया गया था। इसी बात से पता चलता हे नलिनीजी कितनी देश प्रेमिक और समाज सेविका थी।

स्वाधीनता के बाद भारतवर्ष के लोगो में उस्ताह उमंग जाग उठी थी। असम के लोगो में भी उत्साह था। प्रत्येक इंसान अपनी कामो में जुड़ गये थे। नलिनीजी ने भी अपनी लेख के जरिये लोगो को सही मार्ग दर्शन दिया। सन 1931 की स्थापित 'कामरूप महिला समिति' 1947 में नाम बदलकर 'असम प्रादेशिक महिला समिति' हुई। नलिनीजी इस महिला समिति की सभानेत्री और चन्द्रप्रभा शइकियानी सम्पादिका थी। इस महिला समिति के सहयोग से गुवाहाटी में कस्तुरवा समिति की गठन हुई। सन 1849 में असम के जोरहाट जिले के महापुरुष श्रीमन्त संकरदेव की वार्षिक उस्तव की सभानेत्री पद से नलिनी जी वे अपना अमुल्य भाषण प्रदान किया। सन 1954 के जोरहाट में असम साहित्य सभा की 24 अधिवेशन क सभानेत्री रही। इस प्रकार असमिया कवयित्री नलिनीवाला देवी बहुमुखी प्रतिभा की व्यक्तिगत की अधिकारी थी। असम के नलवारी जिले के संस्कृत संजीवनी सभा ने नलिनीजी को 'काव्य भारती' उपाधि प्रदान किया। भारत सरकार ने नलिनीजी को 'पद्मश्री' उपाधि प्रदान किया। अलकानन्दा काव्य के कारण 'साहित्य अकाडेमी' भी मिला। विश्व हिन्दु सन्मिलन द्वारा सन्मान भी प्राप्त किया।

नलिनीवाला देवी जी वेदान्तिक दर्शन के प्रति आस्था रखती थी। परमात्मा के दर्शन के लिए तरसती थी। भारतीय रहस्यवाद की और उनका लगाव था। अपनी भारतभुमि को मरने के बाद भी वह पुन जन्म लेकर इस घरती में ही आना चाहती थी। सन 1977 के 24 दिसम्बर को नलिनीजी की देहान्त हो गया। असमिया साहित्य जगत ने एक अनमोल रतन खो दिया।

संदर्भ ग्रन्थ (असमिया)

1. व्यथार अलकानन्दा - हरिप्रिया बारुकियाल बरगोहाई
2. असमिया साहित्यर सानेकी- प्रेमचन्द्र गोस्वामी
3. असमिया नात्यसाहित्य की जिलिङनी - डा रहिचन्द्र भट्टाचार्य
4. बैष्णव साहित्य की अध्ययन- डॉ इन्दिरा शइककीया बोरा
5. असमिया भाषा और संस्कृति- डॉ बिरिनिच कुमार वरूवा
6. असम की संस्कृति - लीला गगै
7. संचयण- महेश्वर नेउग
8. साहित्य उपक्रमनिका- महेन्द्र बोरा
9. आधुनिक असमिया कविता- चन्द्र कटकी
10. साहित्य विचारर मुल कथा- डाँ हेम बोरा
11. असमिया साहित्य की समीक्षात्मक इतिहास- श्री शतेन्द्रनाथ शर्मा
12. काव्य भारती नलिनीवाला देवी- डॉ लिलि राजबंशी
13. साहित्य आरू संझा- डॉ प्रफुल्ल कटकी
14. जीवनी माला- सतीश चन्द्र काकटि
15. असमिया साहित्यर बुरन्जी- चतीन्द्र नाथ गोस्वामी
16. शर्बशुक्ला महास्वेता- डॉ नमिता डेका
17. असमिया साहित्य रूप रेखा- डॉ करबी डेका हाजरिका
18. साहित्य विचार- राममल डाकुरिया
19. साहित्यर उपक्रमनिका- डॉ महेन्द्र बरा
20. असमिया प्रबन्ध मन्जरी- डॉ परीक्षित हाजरिका
21. साहित्य दर्शन- मनोरन्जन शास्त्री
22. तुलनात्मक साहित्यचन रास्ट्रीय संहति चेतना- वि एईच महाबिद्यालय
23. (असमिया विभाग)